13 / 10 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सारे कल्प के साथ का आधार है

संगमयुग में साथ निभाना

➢➢ नई दुनिया का साक्षात्कार करना

➳ _ ➳ विश्वपरिवर्तक शिवबाबा ने मुझे नई दुनिया का साक्षात्कार कराया है...

→ मैं आत्मा देखती हूँ कि श्री कृष्ण के साथ कुछ आत्माएँ झूला झूल रही हैं, कुछ झूला झुला रही हैं...

→ आयु के भिन्न भिन्न पार्ट में साथ-साथ हैं...

→ साथ -साथ खेलना, पढ़ना, और फिर साथ ही राज्य कर रहें हैं...

■ बाल, युवा, वानप्रस्थ सब अवस्थाओं में भी साथ हैं...

➳ _ ➳ बाबा ये कौन सी आत्माएँ हैं जो श्री कृष्ण के साथ हैं...

→ बच्चे संगमयुग पर जिनका बुद्धियोग बाप के साथ होगा वही इस नई दुनिया में शुरू से अंत तक साथ निभायेंगें...

→ जैसा नशा और ख़ुशी फर्स्ट आत्मा को है वैसा ही नशा और ख़ुशी साथ रहने वाली आत्माओं को भी होगा...

→ हर कल्प में वो साथ हैं, भक्ति भी साथ-साथ शुरू करते हैं...

→ चढ़ेंगे भी साथ-साथ गिरेंगे भी साथ-साथ...

■ सर्व स्वरुप में साथ रहना यह भी विशेष पार्ट है...

➢➢ मुझ आत्मा को भी यह विशेष पार्ट बजाना है...

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपनी चेकिंग करती हूँ...

→ मेरा अपने प्यारे बाबा के साथ बुद्धियोग कितना जुड़ा हुआ है...

→ मेरा हर कर्म उनकी याद से जुड़ा हुआ है...

→ बाप समान बनने का लक्ष्य मुझ आत्मा कि बुद्धि में एकदम क्लियर है...

→ मैं आत्मा बाप समान बनती जा रही हूँ...

■ मैं आत्मा नई दुनिया में जाने का नशा और ख़ुशी अनुभव कर रही हूँ ...

▶ अभी के साथ निभाने का आधार सारे कल्प का आधार बन जाता है|

▶ जो फर्स्ट में साथ रहते वह फिर 84 जन्मों में भी साथ रहते हैं |